लेखेन्द्रशेखरविजयजी अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०३७)

मुख्य टाइटल
समर्पण – मुनि लोकेन्द्रविजयजी
संपादकीय – साध्वी पुष्पाश्रीजी
प्रकाशकीय निवेदन
अभिनन्दन पत्र
अनुक्रमणिका
प्रथम खंड
    आशिर्वाद शुभकामनाएँ
द्वितीय खंड
    विरल विभुति – साध्वी श्री तरुणप्रभाश्रीजी
    संयम और साधना के प्रतिक पुज्य गुरुदेव श्री शितलजी – श्री जयंतीलाल जैन
    अभिनन्दन गीत – मुनि लोकेन्द्र विजयजी
    विरल व्यक्तित्व के धनी – मुनि लोकेन्द्र विजयजी
    इतिहास सत्य का उद्गाता है – पुखराज एस. जैन
    राजस्थान कि धन्य धरा पर – धनराजजी जैन
    जैन समाज में प्रथम शक्तिपीठ – चन्दनमल बी. मुथा
    मानव सेवा एक उपक्रम – वस्तिमल जी. शाह
    अनुभव गम्य अनुभती – साध्वी रत्नरेखाश्रीजी
    मेरे दिक्षा दाता गुरुवर्य – साध्वी कल्पदर्शिताश्रीजी
तृतीय खंड
    ज्ञान आत्मा का गुण भी स्वरूप भी – श्री अमर मुनि
    आत्मवाद के विविध पहलू – महाप्रज्ञ
    जैन दर्शन में समतावादी समाज रचना के प्रेरक तत्व – डॉ. निजाम उद्दिन भारिल
    भगवान महावीर की निती – श्री देवेन्द्र मुनि
    अनेकान्त और स्याद्वाद - डॉ. हुकमचन्द
    अहिंसा-वर्तमान युग में - माणकचंद कटारिया
    उत्तराध्ययन गीता और धम्मपद-एक तुलना – उदयचंद शास्त्री
    जैन साधना का रहस्य – जमनालाल जैन
    जैन शास्त्र और मंत्र विद्या - राममुर्ति त्रिपाठी
    जैन दर्शन में तत्व विवेचना – रमेश मुनि शास्त्री
    भगवान महावीर के सिद्धांतो कि आज के युग में उपयोगिता – रीना जारोली
    ब्रह्मचर्य एक दृष्टि – महेन्द्रसागर प्रचंडिया
    व्याधि मुक्ति शक्ति प्राप्ति का उपाय-स्यादविजय – मुनि धर्मचंदजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपरिग्रह – नीरज जैन
जैन आहार प्रक्रिया और आधुनिक विज्ञान – डॉ. सज्जनकुमार
क्षमा और विश्ध शांती – श्री सुन्दरलालजी मल्हारा
निवृतिवाद आधुनिक संदर्भ में – डॉ. जया पाठक
एक तुलनात्मक अध्ययन-भारतीय दर्शन एवं जैन दर्शन – मुरलीधर श्रीमाली
जैन दर्शन में कर्म मीमांसा – राजीव प्रचंडिया
संगीत का मानव जीवन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव – मदन वर्मा
क्षमा स्वरूप और साधना – दर्शन रेखाश्री
जैन द्रष्टि में धर्म का स्वरूप – प्रो. सागरमल जैन
नारी जागरण के प्रेरक भगवान श्री महावीर एवं वर्तमान नारी समाज – श्री चन्दनमल चाँद
ध्यान साधना पद्धति – श्री रतन मुनि
जैन आगम साहित्य में वर्णित दास प्रथा – डॉ. इन्द्रेशचन्द सिंह
जैन धर्म में ध्यान – मनोहरलाल मणिलाल पुराणी
अपरिग्रह एक विवेचन – डॉ. कमल पुंजाणी
कर्म सिद्धांत – कुसुमबेन मांडवगणे
ब्रह्मचर्य – भँवरसिंह पवार
जैन धर्म में नारी का स्थान – गोपालसिंह पवार
भक्तामर स्तोत्र – श्रीचंद सुराणा
जैन समाज की एकता समस्या एवं समाधान – श्री प्रकाश कांवडिया
जैन ज्योतिष – श्रीमति करुणा शाह
जिनालंकार एक प्राचीन स्तोत्र काव्य – प्रा. श्याम जोशी
महावीर का धर्म वितराग और हमारा दृष्टिराग – अगरचंद नाहरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org